2002

सारथी – जरूरतमंद कलाकारों के मददगार

चारदिवारी और आज़ादी

बुनकर, दस्तकार, लोक कलाकार एवं शास्त्रीय संगीतकारों के साथ
मिलकर आज़ादी का जश्न

14 अगस्त 2002
को
दिल्ली की कच्ची बस्तियों के कलाकार
स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर
आप को सादर आमंत्रित करते हैं
कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008
प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक

आईये कला का माहौल बनायें
कलाकार को एक घर दिलायें

दोस्तो,

14 अगस्त 1988 को स्व0 कमला देवी चटोपाध्याय जी ने हमारे बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा हम सब बुनकर, दस्तकार, संगीतकार और लोक कलाकारों की सहकारी समितियों की नई पीढ़ी को सोंपा था। उस दिन से आज तक हम हर वर्ष एक खास विषय लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आये हैं ।

इस वर्ष का विषय है.....

चारदिवारी और आज़ादी

आज़ादी के बाद आये सामाजिक–आर्थिक बदलाव की एक हल्की आंधी परम्परागत पेशों को इधर–उधर कर गई। शहर और गाँव के कलाकार, कारीगर नये जजमानो की खोज में यहाँ–वहाँ निकल पड़े। मेरी नज़र गाँव के उन कलाकारों पर पड़ी जो घुमते–फिरते फ़नकार थे और इस घुमन्तू जीवनी के भंवर में दिल्ली शहर पहुँचे। यह तीस साल पहले की बात है।

"निकल के शहर में आये तो गाँव से भी गये,
छतों की आस में पेड़ों की छाँव से भी गये!
अजीब शहर है चेहरों का जाल ऐसा है,
किसी ने ये भी न पूछा के हाल कैसा है!"

"रोटी तो कहीं न कहीं से मिल जाती है, कपड़े पुराने खरीद कर पहन लेते हैं। छत के नाम पर झुग्गी डाल रखी है। जिसमें हम 9 लोग रहते हैं। यहाँ सभी का हाल एक सा है। 8–10 लोग हर झुग्गी में रहते हैं। एक डर लगा रहता है कि कब सरकारी लोग आयें और हमें बेघर कर दें। आप ही बताईये ऐसे माहौल में हम कैसे रियाज़ करें? अपनी कला में कैसे सुधार लायें? कहाँ बैठ कर किसी को सिखायें?"

.....एक शास्त्रीय संगीतकार

एक शास्त्रीय संगीतकार की संतान जिसकी पैदाइश और परवरिश शहर की किसी निहायत ही बन्जर व तंग बस्ती में हुई हो उससे यह उम्मीद करना कि वह बसंत राग की बारीकियों को अपनी कला में ला सके बहुत मुश्किल होगा !

"मेरे साथियों की तरह हो सकता है मेरे बच्चे भी सड़क के किनारे पत्थर तोड़ें या हो सकता है कि वह किसी दफ्तर में नौकरी ढूंढे। अपना घर हो तो खरीददार, कदरदान हमें देखने भी आ सकते हैं।

.....एक दस्तकार

"कई वर्षों से बेहतर आजीविका की तलाश में इस शहर में आये थे। पर तंग बस्तियों में रिहाइश होने के कारण करघे लगाते तो सोते कहाँ? हमारे धंधे में रहना और काम करना एक ही जगह होता है जहाँ सारा परिवार हाथ बटा सके।

.....एक बुनकर

"नहीं – मैं पढ़ नहीं सकता लेकिन गाता हूँ। मैं लिख नहीं सकता लेकिन अपने हाथों से जादू जगाता हूँ। इधर–उधर बिखरे, भूले–बिसरे हम लोग पहचान की कमी से लड़ते हैं बेघर हैं हम। जहाँ कहीं भी जायें तीन पत्थर जरूर ढूंढ लेंगे चुल्हा बनाने के लिए। अब 35 सालों से हम इसी शहर में रह रहे हैं। यहाँ हमारे बुजुर्ग मरे, यहीं हमारे बच्चे बड़े हो रहे हैं। कभी–कभी पैसा कमाने के लिए हम गाँव चले जाते हैं, लेकिन अब घर तो हमारा यही शहर है।"

..... एक लोक कलाकार

सभी जानते हैं कलाकारों ने अपनी सृजनता से दुनिया में हिन्दुस्तान की पहचान बनाई है। दुःख की बात यह है कि कलाकार आज भी बुनियादी सुविधाओं के अभाव में जिंदगी जी रहे हैं। इनकी स्थिति आज भी 30 साल पहले वाली है। संस्कृति की नीव का काम करने वाले कलाकार कमज़ोर होंगे तो सभ्यता किस आधार पर टिक पायेगी?

शहर की गन्दी बस्तियों में अनाधिकृत तौर पर रहने वाले कलाकारों की स्थिति ने समाज में उनकी पहचान और ताक़त पर असर डाला है। पारम्परिक हुनर को लोगो तक पहुँचाने के लिए सबसे अधिक ज़रूरत है कि कलाकार को शहर से दूरदराज जगह पर न पटक दिया जाये।

आज दिल्ली में कलाकार मारे–मारे फिरते हैं। साबुन की तरह कला बिकती है, और इस्तेमाल के बाद कोन पूछता है। बहादुरशाह 'ज़फर' के दरबार में दिल्ली घराने के उस्ताद तानरस को चाँदनी महल जागीर के रूप में दिया गया था। आज उसी चाँदनी महल में एक–एक कमरे वाली तंग चालों में सेकड़ों परिवार रह रहे हैं।

घर–माहौल, आस–पड़ोस कोई बहुत बड़ी माँग तो नहीं है। एक छोटी सी चारदिवारी के लिए थोड़ी सी ज़मीन भी सरकार दे दे तो यह कला की ही नही, देश की भी सेवा होगी।

14 अगस्त को अज़ादी की पूर्व संध्या पर हम सब मिल कर, देश भर के कलाकारों की हौसला–अफज़ाई के लिए नेहरु कला कुन्ज के गीत की आख़िरी पंक्तियाँ एक नये जोश में गायेंगे।

धरती पर अम्बर का साया
पन्छी तक का अपना घर है
जग का जी बहलाने वाला
कलाकार खुद बेघर है।
रहने को उसे हो ठिकाने।

हमारा आपसे अनुरोध है कि आप कला को राष्ट्रीय मुख्यधारा का एक सक्रिय हिस्सा बनाने के प्रयास में सहयोग देंगे और कला एवं कलाकार को उसकी भूमिका निभाने में मदद करेंगे।

धन्यवाद

राजीव सेठी

राजीव सेठी

आनन्द ग्राम – नेहरु कला कुन्ज
एक सपना

25 सालों से हमारी कलाकारों के लिए अपनी छत की लड़ाई आज भी कायम है।

आनन्द ग्राम : सामान्य सुविधाओं के साथ बसाहट

1976–77, आपातकाल के दौरान कठपुतली कालोनी में तम्बू डाले लोक कलाकारों को 'क्लीन दिल्ली ग्रीन दिल्ली' के तहत उजाड़ा जा रहा था। इन कलाकारों की एकजुटता के लिए हमने स्व० कमला देवी चटोपाध्याय जी और कई जाने–माने लोगों के साथ मिलकर हिन्दुस्तान में लोक कलाकारों की पहली कोऑपरेटिव सोसाईटी (भूले बिसरे कलाकार कोऑपरेटिव सोसाईटी) बनाई, जिसका संचालन कलाकार खुद करते हैं। इसी सोसाईटी के तहत रहवासी कलाकारों को अपनी छत के साथ–साथ काम, रिहर्सल, प्रदर्शनी, स्कूल, एम्पी थियेटर आदि के लिए देश के चोटी के वास्तुकारों के साथ मिलकर आनन्द ग्राम योजना तैयार की।

इस योजना के लिए 3 जनवरी 1983 को तत्कालीन उपराज्यपाल श्री जगमोहन जी ने तो क्रियान्वयन कमेटी तक का भी गठन किया।

नेहरु कला कुन्ज – अभ्यास, प्रशिक्षण, रिहाइश–एवं खुला स्थान

कला बिरादरी की बेरोज़गारी, शोषण, उपेक्षा और अलगाव की तकलीफों से निपटने के लिए सारथी ने 1987–88 में 4 गृह निमार्ण सहकारी समितियों का गठन किया है। चारों समितियों के 600 सदस्य संगीतकार, दस्तकार, लोक कलाकार और बुनकर, वह लोग हैं जिन्हें खानदानी रूप से कलाऐं विरासत में मिली हैं।

22 मई 1989 में स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपने कार्यकाल में कलाकारों की एक सार्वजनिक सभा में आश्वासन दिलाया की इस वर्ष दीपावली के दीये आप अपने घरों की नींव पर जलायेंगे। 14 नवम्बर 1991 को सेदुल्लाजब मेहरौली में दिल्ली के उपराज्यपाल श्री रोमेश भंडारी ने कलाकारों की एक सर्वभोज महासभा में कुछ पेपर दिखाते हुए कहा ..... कि ये आप लागो को दिखाई गई इस ज़मीन के कागज़ है जो जल्दी ही आप को मिल जायेगी।

कई प्रधान मन्त्री, उपराज्यपाल, डी०डी०ए० व स्लम कमिशनर आदि ने इन योजनाओं को स्वीकार किया और ज़मीन की निशानदेही तक कर दी। खेद है आज तक ज़मीन नहीं मिली। जबकि बिचौलियों ने कलाकारों के नाम पर ज़मीन हथिया ली।

देश की हृदयस्थली में इन दोनों प्रस्तावित योजनाओं का होना, इस बदलते परिवेश में जनसाधारण द्वारा पारम्परिक कलाकारों को बसेरा दिलाने के प्रयास को उजागर करने में सहायक होगा।

कलाकार जीवन का एक दिन

संगीतकार

क्षितिज पर गूंजते हैं सुर
राग भैरवी के
और टूट जाता है
अंधेरे का सन्नाटा
गन्दी बस्तियों की सुबह

शिल्पकार

कांपती धूप–दोपहरी में
डगमग है चाक
झांकता है आकाश से सूरज
देखने को गढ़ते आकारों,
रूपकारों को
कभी कभी छांव दे जाता है
कोई बादल

लोक कलाकार

तीसरे पहर खिंच जाती है
छायाएं लम्बी
एक नट
बनता है ब्रह्माण्ड का अमिट अक्षर
एक गति
अनजानी है सामने होकर भी

बुनकर

ढली शाम
बुनकर ने नई बुनी चादर
को तह कर रखा
फिर टटोली
कमीज अपनी
बिना बटन वाली

नसीर

श्रद्धान्जलि

कोई तो सूद चुकाये
कोई तो ज़िम्मा ले
उस इंकलाब का जो आज तक उधार सा है

कैफ़ी आज़मी
1919–2002

कैफ़ी आज़मी साहब का जन्म उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ जिले में हुआ। एक महान शायर होने के बावजूद उन्होंने हमेशा अन्जान और छोटे कलाकारों को आगे बढ़ने में सहयोग दिया। इसीलिए स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व सांध्या 14 अगस्त 1991 को हमारे पारम्परिक हुनरमन्दों के ऐसे ही एक जलसे में आये। घर के मुद्दे पर अपने कथन से हम सब में नया जोश पैदा किया। इस मोके पर उनके दामाद जावेद अख्तर साहब भी मोजूद थे। जावेद अख्तर साहब की लिखी पंक्तियों से आज हम श्रद्धासुमन अर्पित करते है।

अजीब आदमी था वो !

.......कैफी आज़मी के नाम

अजीब आदमी था वो!

मुहब्बतों का गीत था
बगावतों का राग था
कभी वो सिर्फ फूल था
कभी वो सिर्फ आग था

अजीब आदमी था वो!

वो मुफलिसों से कहता था
के दिन बदल भी सकते हैं

वो जाबिरों से कहता था
तुम्हारे सर पे सोने के जो ताज हैं
कभी पिघल भी सकते हैं

तो बन्दिशों से कहता था
मैं तुमको तोड़ सकता हूँ

सहूलतों से कहता था
मैं तुमको छोड़ सकता हूँ

हवाओं से वो कहता था
मैं तुमको मोड़ सकता हूँ

वो ख्वाब से कहता था
के तुझको सच करूँगा मैं

वो आरजू से कहता था
मैं तेरा हमसफर हूँ
तेरे साथ ही चलूँगा मैं

तू चाहे जितनी दूर भी
बना ले अपनी मंजिलें
कभी नहीं थकूँगा मैं

वो ज़िन्दगी से कहता था
कि तुझको मैं सजाऊँगा
तू मुझसे चाँद माँग ले
मैं चाँद लेके आऊँगा

वो आदमी से कहता था
के आदमी से प्यार कर
उजड़ रही है ये ज़मीं
कुछ इसका अब सिंगार कर

अजीब आदमी था वो !

वो ज़िन्दगी के सारे ग़म तमाम दुख
हर इक सितम से कहता था
मैं तुमसे जीत जाऊँगा
के तुम को तो मिटा ही देगा
एक रोज आदमी
भुला ही देगा ये जहाँ

मेरी अलग है दास्ताँ
वो आँखे जिनमें ख्वाब हैं
वो दिल है जिसमें आरजू
वो बाजू जिन में है सकत
वो होंट जिन पे लफ्ज हैं
रहूँगा इनके दरमियाँ
के जब मैं बीत जाऊँगा

अजीब आदमी था वो !

जावेद अख्तर

सारथी – ज़रूरतमंद कलाकारों के मददगार

निमंत्रण

आप आमंत्रित हैं स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाने के लिए पारम्परिक कला के रहवास की एक बस्ती में। जादू की मंत्र मुग्ध विधाओं पर जमूरे के डायलॉग, इशारों पर नाचती कठपुतली, दूसरी तरफ नाच, गाना और देखेंगे कि घर न होने के बावजूद यहाँ के लोग किस उत्साह और साहस से सदियों पुरानी सांस्कृतिक धरोहर को अपने में समेटे हुए हैं।

कार्यक्रम :
14 अगस्त 2002

10: 00 बजे प्रातः————— झंडा रोहण, राष्ट्रगान
10: 05 बजे प्रातः————— अतिथि भाषण
10: 15 बजे प्रातः————— सांस्कृतिक कार्यक्रम
11: 00 बजे प्रातः————— बस्ती में सामुदायिक कार्यक्रम ।

कार्यक्रम स्थल –: भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008, फोन न0 : 570 61 89

शुभकामनायें

विनीत-
(राजीव सेठी)

सारथी– नेहरु कला कुन्ज, फलेट न० 4, शंकर मार्किट, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली –110001
फोन: 3411107, 3413744 फेक्स: 3414065 ई–मेल: sarthi@nda.vsnl.net.in